फसल विविधीकरण : कृषक आय में स्थायित्व एवं सम्पन्नता

लोकेश कुमार जैन[1], पी. सी. मीणा[2] एवं हनुमान प्रसाद परेवा[3]

1. प्रस्तावना
2. फसल विविधीकरण की आवश्यकता
3. सफल फसल विविधीकरण के उपाय
4. फसल विविधीकरण हेतु आवश्यक बातें
5. फसल विविधीकरण का येागदान
6. फसल विविधीकरण के प्रकार

1. प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र पर एक फसल के स्थान पर दो या दो से अधिक विभिन्न प्रकार की फसलो के उत्पादन से संबधित गतिविधियो का विस्तार करने की प्रणाली फसल विविधीकरण कहलाती है। इसके अतंर्गत कम लाभकारी फसलो के स्थान पर अधिक लाभकारी फसलों, खाद्य फसलो के स्थान पर अखाद्य फसलों एवं अधिक मूल्य वाली फसले, फसल चक्र हेतू उपयुक्त फसल आदि का समावेश किया जाता है। खेती के बदलते परिवेश में जहां प्रति इकाई कृषि क्षेत्र से अधिक उत्पादन की आवश्यकता है वहीं भूमि का गिरता हुआ स्वास्थ्य तथा जलवायु परिवर्तन से बढ़ते जैविक व भौतिक कारक कृषि उत्पादकता के लिए निरन्तर अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के अनुसार उपयोगी फसलों का चयन कर फसल विविधीकरण द्वारा न केवल खेती के बढ़ते विकारों से निजात पाई जा सकती है बल्कि अधिक उत्पादकता के साथ–साथ टिकाऊ खेती तथा गुणवत्तायुक्त खाद्यान्न सुश्निश्चित किया जा सकता है। अत्याधुनिक कृषि मशीनों का फसल विविधीकरण के साथ समावेश कर खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। फसल विविधीकरण, मृदा संबंधित समस्याओं वाले क्षेत्रों में अत्यन्त प्रभावकारी साबित होता है। फसल विविधीकरण हेतु फसलों का चयन क्षेत्र की जलवायु, उत्पादन लागत, सरकारी नीतियों जैसे उत्पादन मूल्य व संरक्षण इकाई की उपलब्धता के ऊपर निर्भर करता है।

2. फसल विविधीकरण की आवश्यकता

बढती हुई जनसंख्या तथा उपभोक्ताओ के खान–पान तथा जलवायु परिवर्तन, मिट्टी के स्वास्थ्य में गिरावट, ऊर्जा उपलब्धता का कम होते जाना, खेती में बढ़ती लागत, भूजल का अत्यधिक दोहन एवं घटता भूजल स्तर वर्तमान परिपेक्ष्य में फसल विविधीकरण को अपनाने पर जोर देता है साथ ही विविधीकरण वर्तमान मे बढ रहे कीट व रोगो तथा रासायनिक उर्वरको के अंधाधुध प्रयोग को कम करने का प्रभावशाली माध्यम है।

[1] सहायक प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर)।

3. सफल फसल विविधीकरण के उपाय

सफल फसल विविधीकरण हेतू वांछित कृषि अनुसंधान जो कि उपलब्ध संसाधनो के अनुरुप फसल पद्धति मे वांछित बदलाव हेतु विकसित किया जा सके तथा कृषक की सामाजिक आर्थिक व पर्यावणीय परिस्थितियो के अनुरुप होने चाहिए यदि सम्भव हो तो अनुसंधान मे कृषक की भागीदारी सुनिश्चित हो। संरक्षण कृषि के समावेश से सफल उत्पादन हेतु वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में बढती हुई चुनोतियों से निपटने की उल्लेखनीय क्षमता हैं।

4. फसल विविधीकरण हेतु आवश्यक बातें

विविधीकरण को एक सफल व्यवसाय बनाने के लिये बाजार के व्यवहार का अध्ययन, जल संरक्षण के क्षेत्र में अनुभव, फसलों के उत्पादों का श्रेणीकरण एवं पेकेजिंग की जानकारी, पशु पालन आदि व्यवसायों का समावेश एवं स्वयं सहायता समूह तथा किसान क्लब आदि द्वारा किसान समुदाय का संगठित होना अतिआवश्यक हैं।

5. फसल विविधीकरण का येागदान

- फसल विविधीकरण द्वारा कृषक की आय व रोजगार के अवसर बढाकर कृषक समुदाय के उत्थान मे महत्वपूर्ण भागीदारी प्रदान की जा सकती है। फसल विविधीकरण द्वारा कृषि उत्पादों के मूल्य में उतार–चढ़ाव से होने वाले प्रभाव को कम करके किसान की आर्थिक स्थिरता को सुनिश्चित किया जा सकता है।
- फसल विविधीकरण के माध्यम से मौजूदा कृषि प्रणालियों मे अधिक मूल्य वाली फसलों का समावेश कर प्रति इकाई उत्पादन व आय में वृद्वि की जा सकती है।
- फसल विविधीरकण के द्वारा सुखा सभांव्य/शुष्क क्षेत्रो एंव मौसम की विपरीत परिस्थितियो से उत्पन्न समस्याओ को कम किया जा सकता है।
- फसल विविधीकरण मे एकल फसल के स्थान पर मिश्रित या अंतर फसल या फसल चक्र मे दूसरी फसल से फसल के सफल उत्पादन हेतू अनुकुल परिस्थितियो मे आशान्वित वृद्धि के साथ फसल उत्पादन बढता है एंव पारिस्थितिकी तंत्र मे सुधार होता है।
- फसल विविधीकरण के द्वारा कृषक परिवार में उपलब्ध श्रम का वर्ष पर्यन्त समान रुप से वितरण होता रहता है फलस्वरूप रोजगार के अधिक अवसर सृजित होते है।
- फसल विविधीकरण के द्वारा बेकार समय मे कमी होती है ।
- फसल विविधीकरण के द्वारा फसल उत्पादन की लागत में आशान्वित एंव सतत् आय प्राप्त होती रहती है जिसमे शुद्ध लाभ अधिकतम प्राप्त होता है यह लाभ फसल उत्पादन मे प्रयुक्त बाहरी आदानो पर निर्भरता कम होने के फलस्वरूप होता है ।

- फसल विविधीकरण के द्वारा मृदा की उर्वरता मे वद्धि एंव आगामी फसल मे उर्वरको की कम आवश्यकता या फसल अवशेष के अपघटन द्वारा (कार्बनिक प्रदार्थ) विभिन्न पोषक तत्वो की उपलब्धता द्वारा उत्पादन मे वृद्धि होती है ।
- फसल विविधीकरण के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों जैसे–मिट्टी, पानी, जलवायु और वनस्पति का संरक्षण एंव समुचित तथा सम्पूर्ण उपयोग किया जा सकता है, जिसमें पर्यावरण तंत्र भी सुरक्षित होता हैं।
- विविधीकरण के द्वारा कृषक परिवार के पोषण मे सुधार के अवसर प्राप्त होते है क्योकि विविधीकरण मे प्रायः सभी प्रकार की फसलो जैसे खाद्यान्न, दलहनी, तिलहन, बीजीय मसाले, बागवानी तथा सब्जियां।
- कृषि–वानिकी इत्यादि का समावेश किया जाता है। जिसमे संतुलित पोषण हेतू आवश्यक तत्व जैसे कार्बोहाइडेड , प्रोटीन व वसा आदि की पूर्ति होने से पर्याप्त खाद्य उर्जा मिलती है एंव रोगो से लड़ने की क्षमता मे वृद्धि होती है।
- फसल विविधीकरण में अनेक प्रकार की फसलो का समावेश होता है जिससे मौसम मे होने वाले अवांछित परिर्वतन से फसल उत्पादन मे निश्चिता बढती है जो जलवायु परिवर्तन की वर्तमान परिस्थित मे अति आवश्यक है। फसल स्वरूप जौखिम मे कमी होती है।
- फसल विविधीकरण अपनाने से उत्पादो मे भिन्नता के फलस्वरूप निर्यात मे वृद्वि की जा सकती है।
- फसल विविधीकरण के द्वारा घरेलू मांग व खाद्य पदार्थों की आपूर्ति में सामंजस्य बनाया जा सकता है।
- फसल विविधीकरण द्वारा कीट व बीमारियो का प्रकोप भी कम होता है इसका मुख्य कारण लाभदायक कीटो की सख्यां मे वृद्धि एंव कीटो मे पारस्परिक भिन्नता होती है फलस्वरूप इनका प्रयोग कम होता है एंव हानिकारक कीटनाशी पर निर्भरता कम होना एंव अधिक उत्पादन प्राप्त होना आदि है।
- फसल विविधीकरण द्वारा कृषक फसल उत्पादन के साथ मय कृषि उधम की स्थापित कर सकता है जिसमे मुख्य रूप से रेशम कीट पालन, मधुमख्खी पालन, पशुपालन इत्यादि एंव वर्ष पर्यन्त सतत आय प्राप्त कर सकता है।

6. फसल विविधीकरण के प्रकार

फसल विविधीकरण के अन्तर्गत उत्पादन को दो तरीको से बढाया जा सकता है। एक तो फसल क्षेत्र बढाकर तथा दूसरे उपज और मूल्य संवर्द्धन की गतिविधियो द्वारा इसलिए दो प्रकार से फसल विविधीकरण को अपनाया जा सकता हैं ।

- क्षैतिज विविधीकरण के अंतर्गत फसल क्षेत्र को बढ़ाकर अर्थात अधिक से अधिक फसल प्रणालियों का उपयोग तथा साथ ही पारंपरिक फसलों के स्थान पर गैर–पारंपरिक फसलों की खेती की जाती है।
- उर्ध्वाधर विविधीकरण या कार्यक्षेत्र विविधीकरण :– कार्यक्षेत्र विविधीकरण क्षैतिज विविधीकरण करने के लिए पूरक है। कार्यक्षेत्र विविधीकरण का मतलब अनुप्रवाह गतिविधियो से है अर्थात उत्पाद का मूल्य

संवर्धन से है उर्ध्वाधर विविधीकरण जब किसानों को उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है उस दशा में अत्यन्त सार्थक भूमिका अदा करता है। इसके अंतर्गत मुख्यतः गैर कृषि गतिविधियो जैसे विपणन भंडारण और प्रसंस्करण है इसलिए इसे उत्पादन विविधीकरण का उच्चतम आर्थिक प्रतिफल और मूल्य संबर्द्धन के लिए दोहन किया जाना चाहिए कार्यक्षेत्र विविधीकरण के अन्तर्गत अनुप्रवाह गतिविधियो के लिए काफी अवसर है जहा पर प्रौद्योगिकी उपलब्ध है वहा पर कार्यक्षेत्र विविधीकरण हासिल किया जा सकता है जैसे कि उत्पादो के अंतिम स्वरूप के लिए उंची कीमत इन गतिविधियो मे निवेश का औचित्य साबित करने के लिए आकर्षक हो सकती है उदाहरण–गेहू की फसल से आटा, ब्रेड, सुजी, बिस्कुट इत्यादि उत्पादो कें रूप मे मूल्य संवर्द्धन किया जाता है।

सारांश :– फसल विविधीकरण वर्तमान समय में उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं की मांग हैं, जिससे कृषि उत्पादन में स्थायित्व तथा कृषक की आय में उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त की जा सकती हैं।